मानवाधिकार दिवस, 2020
बेहतर उबरें: मानवाधिकारों के लिये खड़ें हों

न्यूयॉर्क, 10 दिसम्बर 2020

कोविड-19 महामारी ने मानवाधिकारों के बारे में दो बुनियादी सत्य और ज़्यादा उजागर किये हैं.

पहला, मानवाधिकार उल्लंघन से हम सभी को नुक़सान पहुँचता है.

कोविड-19 महामारी ने कमज़ोर समूहों पर विषम अनुपात में असर डाला है जिनमें अग्रिम मोर्चों पर काम करने वाले लोग, विकलाँग लोग, वृद्धजन, महिलाएँ और लड़कियाँ, व अल्पसंख्यक शामिल हैं.

ऐसा इसलिये हुआ है क्योंकि हमारे समाजों में निर्धनता, असमानता, भेदभाव, हमारे प्राकृतिक पर्यावरण की तबाही और अन्य मानवाधिकार उल्लंघनों ने बहुत सारी कमज़ोरियाँ पैदा कर दी हैं.

साथ ही, महामारी ने मानवाधिकारों को भी कमज़ोर किया है, इसने ही, बलशाली सुरक्षा कार्रवाइयों और दमनकारी उपायों के इस्तेमाल के लिये बहाने मुहैया कराए हैं, जो नागरिक स्थान और मीडिया की स्वतन्त्रता को सीमित करते हैं.

महामारी द्वारा उजागर किया गया दूसरा सत्य ये है कि मानवाधिकार सार्वभौमिक हैं और इनसे हम सबकी हिफ़ाज़त होती है.

महामारी का मुक़ाबला करने के असरदार उपाय एकजुटता व सहयोग पर आधारित होने ज़रूरी हैं.

एक वैश्विक ख़तरे के ख़िलाफ़ लड़ाई में विभाजनकारी, सर्वसत्तावादी और राष्ट्रवादी तरीक़ों का कोई औचित्य नहीं है.

महामारी का मुक़ाबला करने के प्रयासों और पुनर्बहाली के उपायों में, सर्वजन और उनके अधिकार ही सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण होने चाहिये. हमें, इस महामारी को हराने और भविष्य में मज़बूत हिफ़ाज़त के लिये, सार्वभौमिक व अधिकार आधारित ढाँचे की ज़रूरत, जैसेकि सभी के लिये स्वास्थ्य करवेज.

मानवाधिकारों के लिये कार्रवाई की मेरी पुकार में, महामारी का मुक़ाबला करने के प्रयासों, लैंगिक समानता, जनभागीदारी, जलवायु न्याय और टिकाऊ विकास में - मानवाधिकारों को केन्द्रीय महत्व दिये जाने की ज़रूरत झलकती है.

मानवाधिकार दिवस पर, और हर दिन, आइये, हम कोविड-19 महामारी की तबाही से उबरने, और सभी के लिये एक बेहतर भविष्य बनाने की ख़ातिर, साथ मिलकर कार्रवाई करने का संकल्प लेते हैं, जिसमें मानवाधिकारों को चौतरफ़ा अहमियत दी जाए.

***